

**समकर्णा पुं.** (तत्.) 1. किसी चतुर्भुज के आमने-सामने के कोणों के ऊपर स्थित रेखाएँ 2. शिव 3. महात्मा बुद्ध।

**समकाल पुं.** (तत्.) समान काल, एक जैसा समय, अवधि।

**समकालिक वि.** (तत्.) एक ही समय में होने वाले किन्हीं दो या कई का अस्तित्व या घटित घटनाएँ।

**समकालीन वि.** (तत्.) 1. जो दो या अनेक (व्यक्तित्व, घटना, सत्ता) एक ही समय में हों 2. जो उत्पत्ति, स्थिति आदि की समकालिक दृष्टि से एक ही समय के हों।

**समक्रिस्टलता स्त्री.** (तत्.+अं.) एक जैसे क्रिस्टलीय रूप वाले किंतु भिन्न रासायनिक संघटन युक्त पदार्थों का गुण-धर्म।

**समकोण पुं.** (तत्.) वह कोण जो  $90^\circ$  का हो वि. ऐसी त्रिभुजाकार आकृति जिसका एक कोण  $90^\circ$  का हो।

**समकोणक वि.** (तत्.) समकोण वाला, समकोण।

**समक्वाथ पुं.** (तत्.) आयु. वह काढा जिसे पानी में उबालने के बाद उसका आठवां भाग मात्र शेष रह गया हो।

**समक्रमण पुं.** (तत्.) 1. एक से अधिक कार्यों या घटनाओं को एक ही समय में स्थानभेद से घटित होना 2. दो भिन्न कार्यों को एक ही समय में करना, समकालन।

**समक्रमिक वि.** (तत्.) वे घटनाएँ या कार्य जो एक ही समय में युगपत् भिन्न भिन्न स्थानों में घटित हुई हों।

**समक्रामक वि.** (तत्.) समक्रमण करने वाला।

**समक्ष वि.** (तत्.) जो आँखों के सम्मुख हो, प्रत्यक्ष। क्रि.वि. सामने।

**समक्षता स्त्री.** (तत्.) प्रत्यक्ष दिखने या होने की स्थिति।

**समग्र वि.** (तत्.) सकल, संपूर्ण, सारा।

**समग्रता स्त्री.** (तत्.) संपूर्णता।

**समग्री स्त्री.** (देश.) सामग्री।

**समचतुर्भुज वि.** (तत्.) जिसकी चारों भुजाएँ एक समान हों पुं. उक्त प्रकार की बनी एक आकृति या चित्र या क्षेत्र।

**समचर वि.** (तत्.) 1. सदा एक समान व्यवहार करने वाला 2. सब के साथ एक जैसा आचरण करने वाला।

**समचार पुं.** (देश.) समाचार।

**समचित्त वि.** (तत्.) जिसके चित्त की अवस्था सदा एक जैसी (राग-द्वेषादि से शून्य) रहती हो, स्थित प्रज्ञ।

**समचेता वि.** (तत्.) दे. समचित्त।

**समज पुं.** (तत्.) 1. जंगल, वन, अरण्य 2. पशुओं का समूह, झुंड 3. पक्षियों का झुंड स्त्री. समझ।

**समजात वि.** (तत्.) 1. जो उत्पत्ति की दृष्टि से समान हो 2. जिनका जन्म समान परिस्थिति में हुआ हो।

**समजातिक वि.** (तत्.) जो परस्पर एक ही जाति या वर्ग के हों।

**समजातीय वि.** (तत्.) जो एक ही जाति या वर्ग के हों। सजातीय।

**समज्ञा स्त्री.** (तत्.) 1. ख्याति, प्रसिद्धि 2. यश, कीर्ति।

**समज्या स्त्री.** (तत्.) 1. विशिष्ट लोगों का समाज या समूह 2. सभा 3. प्राचीन काल में प्रसिद्ध एक विशेष उत्सव जिसमें स्त्री-पुरुष, छोटे-बड़े सभी मिल-जुलकर विविध तरह के खेल-तमाशा, नाटक आदि करते हुए मनोरंजन करते थे।

**समझं स्त्री.** (तद्.) 1. उचित-अनुचित को जानने की शक्ति, विवेक 2. वृद्धि अक्ल।

**समझदार वि.** (तद्.+फा.) 1. विवेकशील 2. बुद्धिमान, अक्लमंद।

**समझदारी स्त्री.** (तद्.+फा.) 1. बौद्धिक कुशलता 2. बुद्धिमत्ता, अक्लमंदी।

**समझना स.क्रि.** (तद्.) किसी वस्तु, व्यक्ति, तथ्य आदि के संबंध में ठीक तरह से जान लेना, बुद्धि से जानना या पहचानना।